Topic 12 तृतीया विभक्ति 2

सहयुक्तेऽप्रधाने ।

सहार्थेन युक्ते अप्रधाने तृतीया स्यात् । पुत्रेण सहाऽऽगतः पिता । एवं साकं सार्धं समं योगेऽपि । विनापि तद्योगं तृतीया 'वृद्धो यूना' इत्यादि निर्देशात् ॥

सह अर्थवाले शब्दों के योग में अप्रधान में तृतीया हो । पुत्रेण सहागतः (सह + आगतः) पिता पुत्र के साथ आया । इसमें पिता प्रधान है तथा पुत्र अप्रधान । गुरुः शिष्यैः सहाऽऽगतः । गुरु शिष्यों के साथ आया । इसमें गुरु प्रधान तथा शिष्य अप्रधान । इसी प्रकार सह के अर्थवाले साकम् सार्धम् समम् के योग में भी तृतीया होती है ।

सुशीलो बन्धुना सार्धं याति विद्यालयं सदा ।
नित्यं गुडको समं तेन साकं तेनैव क्रीडति ॥

इन सब उदाहरणों में अप्रधान में तृतीया है । भाइयों में छोटे भाइयों का अप्राधान्य समझना चाहिए । कहीं कहीं सह आदि योग के बिना भी तृतीया होती है । वृद्धो यूना' इत्यादि पाणिनीय प्रयोगों के निर्देश से । यहाँ सह शब्द का अध्याहार होगा । (यूना + सह) वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः । यह पूरा सूत्र है ।

येनाङ्गविकारः ।

येनाङ्गेन विकृतेन अङ्गिनो विकारो लक्ष्यते ततस्तृतीया स्यात् । काणः अक्ष्णा । अङ्गिसंबन्धिकाणत्वविशिष्ट इत्यर्थः । अङ्गविकारः किम् ?

अक्षि काणमस्य ।

..., उस अङ्ग का विकार लक्षित
अङ्गवाचक शब्द से तृतीया हो।

अङ्गानि सन्ति अस्मिन् – इस विग्रह में 'अर्श आद्यच्' से अङ्ग शब्द से अच् प्रत्यय होकर (अङ्ग + अच्) (अ) = अङ्गों का अर्थ अङ्गी होता है। तब अङ्गस्य विकारः = अङ्गविकारः यह षष्ठी तत्पुरुष समास होता है। इस उदाहरण में अक्षि शब्द से तृतीया का एकवचन प्रयुक्त होने से अक्ष्णा रूप बनता है।

अङ्गविकारः किम्? ग्रंथकार का प्रश्न है कि सूत्र में अङ्गविकार शब्द का ग्रहण क्यों किया? उत्तर यह है कि उसके अभाव में 'अक्षि काणमस्य' इस प्रत्युदाहरण में अङ्गी का विकार न बताने पर भी विकृत अङ्ग अक्षि में प्रथमा के स्थान में अनिष्ट तृतीया हो जायगी। इसी प्रकार निम्नलिखित उदाहरण भी जानने चाहिए। नेत्राभ्याम् अन्धोऽपि अन्तर्नेत्रेण पश्यति। इस उदाहरण में अन्तर्नेत्रेण शब्द में करण तृतीया समझनी चाहिए।

नेत्रेण काणः समभीक्षतेऽयं पादेन खञ्जो विषमं प्रयाति।
पृष्ठेन कुब्जो नत एति मार्गे कार्यं न कुर्यात् कुकरः करेण।

खञ्जः = लंगड़ा। कुब्जः = कुबड़ा
~~कुकर~~ कुकरः = लंगड़ा, लूला। नेत्र से काना यह समान रूप से देखता है, पैर से लंगड़ा विषम रूप से चलता है। पीठ से कुबड़ा मार्ग में नत होकर (झुककर) गमन करता है। तथा हाथ से लूला कार्य नहीं कर सकता।

इत्थंभूतलक्षणे ।

कञ्चित्प्रकारं प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्यात् । जटाभिस्तापसः । जटाज्ञाप्यतापसत्वविशिष्टः

इत्यर्थः

किसी प्रकार (विशेषता) को प्राप्त हुए पदार्थ के लक्षित होने में तृतीया हो। अर्थात् जिससे विशेषता लक्षित होती है उस विशेषता के वाचक शब्द से तृतीया विभक्ति होती है। जटाभिस्तापसः' का अर्थ है - जटाओं से ज्ञाप्य तापसत्व से विशिष्ट पुरुष। भाव यह है कि जटाओं से तपस्वी प्रतीत होता है। यहाँ जटा शब्द से तृतीया विभक्ति का बहुवचन प्रयुक्त है। इसी प्रकार कमण्डलुना भिक्षुः प्रतीयते। दण्डेन संन्यासी ज्ञायते।

पण्डितस्तिलकैर्भाति, पीतवस्त्रैर्बटुसखा।
अतिगैरिकवेषेण, भस्मना साधुरेव च।

उपरिनिर्दिष्ट पदों में उक्त सूत्र से तृतीया जाननी चाहिए।

संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि ।

संपूर्वस्य जानातेः कर्मणि तृतीया वा स्यात्। पित्रा पितरं वा सञ्जानीते।

सम् उपसर्गपूर्वक ज्ञा धातु के कर्म में तृतीया विकल्प से हो। पित्रा' इत्यादि उदाहरण में 'पित्रा' यह तृतीया प्रयुक्त हुई है तथा पक्ष में 'पितरम्' यह द्वितीया भी। पिता से सम्यक् परिचय करता है अथवा पिता को सम्यक् पहचानता है।

यह उदाहरण का व्यावहारिक अर्थ है। पितामहं वा संजानीते। पितामहेन संजानीते। मतामहेन मातामहं वा संजानीते। प्राक्तन प्राक्तनसतीर्थ्यै सतीर्थ्येन वा संजानीते। पुराने सतीर्थ्य से परिचय प्राप्त करता है। इत्यादि उदाहरण भी समझने चाहिए।

हेतौ।

हेतुः कारणम्। हेत्वर्थे तृतीया स्यात्। द्रव्यादिसाधारणं निर्व्यापारसाधारणं च हेतुत्वम्। करणत्वं। क्रियामात्रविषये व्यापारनियतं च। दण्डेन घटः। पुण्येन दृष्टो हरिः। फलमपीह हेतुः। अध्ययनेन वसति।।

हेतु रूप अर्थ में तृतीया हो।

हेतुनिर्देशक शब्द से। हेतु का अर्थ कारण है। हेतु का लक्षण है— द्रव्यादिसाधारणं निर्व्यापार साधारणं च हेतुत्वम्। अर्थात् जो द्रव्य, गुण, और क्रिया में साधारण हो तथा निर्व्यापार में साधारण हो वह हेतु है। दण्डेन घटः। यह द्रव्य का उदाहरण है। घट का कारण द्रव्य है और वह व्यापार शून्य भी है। पुण्येन दृष्टो हरिः। यह गुण का उदाहरण है। हरि दर्शन - क्रिया का पुण्य हेतु है। हरिदर्शन- क्रिया के साथ पुण्य का अन्वय होने से उसमें करणता का संदेह हो सकता था पर वह व्यापारशून्य है अतः संदेह निर्मूल है।

गम्यमानापि क्रिया कारक विभक्तौ प्रयोजिका।

अलं श्रमेण। श्रमेण साध्यं नास्तीत्यर्थः। इह साधनक्रियां प्रति श्रमः करणम्। शतेन-शतेन-

तस्मात् पाययति पयः। शतेन परिच्छिद्येत्यर्थः।

गम्यमान क्रिया और कारक विभक्ति में प्रयोजिका होती है। अलं श्रमेण — इस उदाहरण में 'साध्यम्' यह क्रियापद अध्याहृत है। उसके प्रति श्रम करण है, अतः करण में तृतीया होती है। उदाहरण का अर्थ है — अब श्रम से कुछ साध्य नहीं है। शत-शत से परिच्छेद करके बछड़ों को जल पिलाता है। इसी प्रकार अलं महीपाल तव श्रमेण।

अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया (वा०)

दास्या संयच्छते कामुकः। धर्मे तु भार्यायै संयच्छति।

अशिष्ट व्यवहार में दाण धातु के प्रयोग में चतुर्थी के अर्थ में तृतीया होती है। दास्या संयच्छते — इस उदाहरण में प्रलोभनार्थ कुछ कामुक का दासी को देना अशिष्ट व्यवहार है। अतः यहाँ 'दास्या' कामुक का दासी यह तृतीया विभक्ति हुई है। अशिष्टता के साथ लेन-देन का व्यवहार गौण है तथा वह कोटि में प्रविष्ट है। अतः सहार्थ ध्वनि के कारण तृतीया का प्रयोग किया गया है। ऐसा भाव प्रतीत होता है। धर्म में तो भार्यायै संयच्छति, इसमें चतुर्थी ही प्रयुक्त होती है। गृही को अपनी भार्या के लिए सब कुछ धर्मानुसार